समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 28 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

लोकतंत्र : चिढ़ाते प्रश्न

डॉ. किशन कछवाहा

भारत एक लोकतात्रिक देश है। जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिये परिभाषित है। भारत ने एक लोकतांत्रिक और सेकुलर देश बनाने की लड़ाई लड़ी थी । लेकिन दुर्भाग्य से पाकिस्तान के संस्थापक कायद–ए–आजमा मोहम्मद अली जिन्ना की सोच ने हिन्दू–मुसलमान के बीच गहरी खाई पैदा कर दी जिसने पूर्वजो द्वारा दी गयी सीख पर पानी फेर दिया कि उनकी विरासत जिसके वारिस हिन्दू भी है, मुसलमान भी । राहुल जी ने विदेश की जमीन पर उन्होंने यह क्या कह दिया कि पूरा भारत खानदानों पर चलता है ? दो–चार दस–बीस खानदान होंगे। शासन करना याने सत्ता पर काबिज होना–वह भी केन्द्र सरकार में । अपुष्ट जानकार एक गलत बात बोलकर सारा माहौल खराब कर देता है। क्या लोगों को यह तथ्य ज्ञात नही है कि यह अवसर सिर्फ जवाहर लाल नेहरू ,उनकी बेटी इंदिरा गॉधी, फिर उनके पुत्र राजीव गॉधी को ही, प्राप्त हुआ था जो चालीस वर्ष तक सत्ता पर काबिज रहे सन् 47 में देश को आजादी मिली थी। आज 70 साल होने को आ रहे है। यह, परिवार 40 साल देश की सत्ता पर रहा। वंशवाद कैसा होता है– देश की जनता इस बात को अच्छी तरह जानती हे। वह राहुल जी के तर्को को पचा नही पाती । देश में कॉग्रेस इसीलिये अप्रासंगिक हो गयी है, वह न तो सेकुलर रह गयी है, न ही लोकतांत्रिक जिसके लिये आजादी की लड़ाई लड़ी गयी थी। स्थिति यह हो गयी है कि न हिन्दू कॉग्रेस पर भरोसा करता है, न ही मुसलमान। सन् 14 के चुनाव में यू.पी.ए की जबरदस्त हार ने तो हौसला ही पस्त कर दिया है। कॉग्रेस सहित विपक्ष न तो नोटबंदी को भुना पाया, न ही जीएसटी की हॉं–ना के द्वन्द में यश ही बटोर पाया। राष्ट्रपति पद के लिये एक साझा उम्मीदवार तय करने में न–नुकुर देर तक चलती रही। नीतीश कुमार की एन.डी.ए वापिसी ने मानों विपक्ष की कमर ही तोड़कर रख दी। लालू प्रसाद यादव की 27 अगस्त की महारैली भी कोई माहौल बनाने में सक्षम सिद्ध नही हो सकी। इधर साम्यवाद की बुरीतरह गिरती शाख के कारण भारत ही नही , विश्व में उनका कही और ठिकाना नही रह गया। बढ़ती राष्ट्रवाद की धमक से वे हतप्रभ हैं। मूल बात को राजनैतिक चश्मे से देखे जाने के कारण भटकाव भरे रास्ते पकड़ लिये गये है। भ्रम टूट भी रहे हैं लेकिन गहराया हुआ, अहं रास्ता छोड़ने के विचार के आगे दीवार बन गया है। यह देश प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाला देश है। यह धार्मिक सहिष्णुता, बन्धुत्व और विविधता में भरोसा रखता है। इसी में एकता भी निहित हैं। इसे क्रांतिकारियों ने कुर्वानियॉ देकर सहेजा है। इस भारतीय नष्ज को गंभीरता से समझ लेने की जरूरत है। विश्व का भारत के प्रति अनुराग बढ़ रहा लेकिन विपक्ष कुछ समझना नही चाहता। वह हैरानी के घेरे में सांस ले रहा है। राहुल जी ने विदेशी जमीन पर यह तो स्वीकार किया कि अहंकार बढ़ने के कारण दुष्परिणाम भुगतने पड़े है लेकिन उससे शिक्षा कैसे लें– अमल में कैसे लायें–यह निश्चय किया जाना आगे के राजनीतिक भविष्य पर निर्भर करेगा। क्या कॉग्रेस सहित विपक्षी दलों की यह मजबूरी है कि भृष्टाचार, अपराधी करण, जातिवाद और वंशवाद पर भी अपना मुंह खोलना नही चाहते ? क्या वे इसे महामारी नही मानते? क्या इसे भी वे नजर अंदाज नहीं कर रहे कि संख्या ऐसे लोगों की है जो विदेशी और देश द्रोही गिरोहों के पक्षधर हैं। विपक्ष को इस संशय से भी बाहर निकलना होगा कि एक देश के तौर पर भारत वर्ष का अस्तित्व तभी तक है जब तक यहॉ हिन्दू बहुलता कायम है। बॉग्ला देश और पाकिस्तान ने इसे साबित भी कर दिया है। जनता जागरूक हो रही है। देश तभी सशक्त बन सकेगा, जब यहॉ के लोगो की केवल एक पहचान हो कि वे भारतीय नागरिक हैं। असल में कॉग्रेस सहित संपूर्ण विपक्ष इस तथ्य को समझने में गलती करता रहा कि लाखों वर्षो से भारत की जनता के हदय में रचा–बसा सनातन धर्म गहराई से जड़े जमाये हुये है। ईसाई धर्म दो हजार साल पहले और मुस्लिमधर्म इस्लाम 1400 वर्ष पहले अस्तित्व में आया है। इसमें अंतर नही किये जाने के कारण उसकी द्विविधा की स्थिति पहले भी थी और आज भी बनी हुयी है। सभी स्वीकार तो करते है कि भारत एक जनतांत्रिक देश है। सच्चाई है भी । लेकिन राजनैतिकदल लगभग सभी व्यवहारिक रूप से आंतरिक स्वतंत्रता देने को विद्रोह ही समझते हैं। क्यों ? इसका कारण हमारे हृदयों में सदियों से फलता–फूलता सामतंवाद के अलावा क्या हो सकता है ? सामान्य आदमी की न तो कोई पहचान है न ही उसकी आवाज है। सन् 47 में आजादी मिलने के बाद से ही अंधविश्वास का आलम बना रहा है। यदि भारत ने सन् 71 में ही वामपंथी आर्थिक रास्ते पर चलना उद्देश्य न बनाया होता तो आज भारत विश्व के महान और शक्तिशाली विकशित देशों की प्रथम पंक्ति में होता। गलतियॉ तो हुयी है। उनसे सबक लेने की जरूरत है। हकीकत पर पर्दा डालने की कोशिशें होती रही हैं। यद्यपि आज हकीकत सुनाने वाले कम ही नजर आते हैं। चरित्र हनन की जो सियासत चल पड़ी है। राजनेता इस प्रश्न का जवाब स्वयं से क्यों नही पूछते कि–आज संसद और सांसद में द्वैत, क्यों नजर आता है ? सत्तर प्रतिशत से अधिक गरीबी वाले इस महान देश में सत्तर प्रतिशत सांसद करोडपति कैसे बन गये ? इनमें से अनेकों को जनता आपराधिक पृष्ठभूमि का व्यक्ति क्यों मानती है ? इसी से जुड़ा एक सवाल और है कि संदेहास्पद ओर आपराधिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति को एक क्षेत्र की जनता अपना प्रतिनिधि क्यों चुन लेती है–आखिर वे कौन सी मजबूरियॉ है ? गरीबों और अमीरों की आय में चौकाने वाला ऑकड़ा सामने आ रहा है। निकट भविष्य में इसे कम किया जाना भी संभव नजर नही आता। देश की एक प्रतिशत जनतर 58 प्रतिशत घन की मालिक बन चुकी है अर्थात देश में 84 ऐसे अरबपति है जिनके पास 248 अरब डालर की अकूत सम्पति है अमीरो को पंख लग गये, जबकि गरीब एक स्थान पर स्थिर खड़ा रहकर सिर्फ जाते काफिले का गुबार देखता रह गया। इस भारी मात्रा में इकट्ठे घन से एक और बड़ा अपराध हुआ कि सत्ता भी उनके हाथ में सिमट कर रह गयी। अरबपतियों के हाथों में आयी राजनीतिक ताकत आज भी भारी और कल भी भारी रहना संभावित है। परिणाम स्वरूप कमजोर वर्ग निरन्तर उपेक्षित ही बना रहेगा। वर्तमान 16 वीं लोकसभा में 400 से भी ज्यादा सांसद करोड़ो से भी अधिक सम्पति के मालिक है। बढ़ती असमानता के मामले में भारत क्रम में दूसरे नम्बर पर है। क्या यह आर्थिक विषमता लोकतांत्रिक भारत के लिये चिन्ताजनक नही होनी चाहिये ?

कश्मीरी पंडितों का विरोध और रोहिन्ग्याओं से सहानुभूति

बान्गलादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने म्यॉमार से पलायन कर आये रोहिन्ग्या मुसलमानों को शरण देकर अपनी रहमदिली दिखायी है। इससे एक प्रश्न सहज ही उठ खड़ा हुआ है कि यदि ऐसे शरणार्थी हिन्दु या बौद्ध होते तो क्या वे ऐसे ही सहानुभुति दिखलातीं? संभवतः नही, क्यों कि बांगलादेश के भीतर हिन्दुओं एवं अन्य अल्पसंख्यक समूहों पर भारी अत्याचार हो रहे हैं। उनके घर–बार जला डाले गये है। उन्हे देश छोड़ने वाध्य किया जा रहा है। क्या उन्होने इन अत्याचार पीड़ित हिन्दु परिवारों के पास जाकर सहानुभुति के दो शब्द कहकर ढ़ाडस बँधवाने का कार्य किया ? इस पलायन के परिणाम स्वरूप मुस्लिम आतंकी संगठनों को भारत में स्थित रोहिंग्याओं को आतंकी समूहों में भर्ती कर लेने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो गया है। लश्करे तॉयबा ने इस अवसर का लाभ उठाना भी शुरू कर दिया है। इस मामले में केन्द्र सरकार ने प्रान्तीय सरकारों को समुचित दिशा निर्देश भी जारी कर दिये हैं क्योकि भारत उन्हे अप्रवासी (अवैध) मानता है। शरणार्थी का दर्जा पाने की एक प्रकिया होती है, किसी ने अभी तक उस प्रकिया का पालन नही किया है। इन रोहिंग्याओं को पाकिस्तान स्वयं शरण देने तैयार नही है। मुस्लिम राष्ट्र भी इन 10–12 लाख रोहिन्ग्याओं की समस्या से निपटने के मामले में चुप्पी साधे हुये हैं। संभवतः उन्हे यह डर सता रहा होगा कि कही विश्व के अन्य राष्ट्र उनसे यह न कहने लगें कि वे उन्हें अपने राज्यों में क्यों नही बसा लेते ? भारत में जरूर दो तरह के लोग आवाज उठा रहे हैं उनसे एक है एत्तहाद मुसलमीन के नेता सांसद औबैसी, दूसरे हैं कश्मीर के अलगाव वादी नेता जो भारत को अपना देश ही नही मानते। वे वहॉ तिरंगा फहराने पर भी एतराज उठाते हैं। यही लोग कश्मीरी पंड़ितों को हकलाने और उनपर अत्याचार करने के लिये जिम्मेदार रहे हैं। कश्मीर में इस्लामी स्टेट के झण्ड़े फहराते हैं। पाकिस्तान के नारे लगाते हैं। म्यांमार की स्टेट कौंसिलर ऑग सान सू ने स्पष्ट रूप से कहा है कि म्यॉमार की हिंसा के लिये रोहिन्ग्या आतंकी ही जिम्मेदार है, जो पिछले वर्षो से लगातार हिंसक बारदातों को अंजाम देते हैं। इन्होने 25 अगस्त को पुलिस पोस्ट पर हमले किये, एक बौद्ध लामा की हत्या कर दी आदि आदि। यह भी आरोप लगते रहे हैं कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई. एस. आई और वहॉ स्थित आतंकी संगठन रोहिन्ग्याओं को उकसाकर म्यांमार में विभिन्न स्थलों पर हिंसक घटनाओं को अंजाम देते रहे हैं। अभी हाल में कुख्यात आतंकी संगठन जमात–उद– दावा के प्रमुख हाफिज सईद का रोहिन्ग्याओं के समर्थन में दिया गया बयान इन तथ्यों की पुष्टी करता है। मुस्लिम देश आमतौर पर अपने देश में शरणार्थियों को आने नही देते। अरब के लाखों लोग असहाय अवस्था में यूरोप के देशों में शरण लेने को बाध्य हैं रोहिन्ग्याओं को सिर्फ भारत ही नही, मुस्लिम देश बॉग्लादेश, इण्डोनेशिया ने भी रहने से मना कर दिया है। कारण यह है कि उनपर आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है। कुछ वर्षो पूर्व गया में हुये विस्फोट में रोहिन्ग्या समुदाय का ही हाथ होने के सबूत मिले थे। गत सोमवार को ही दिल्ली में अलकायदा के एक आतंकी को हिरासत में लिया गया है, जो रोहिन्ग्यों को आतंकी संगठन में भर्ती कराने के उद्देश्य से आया था। इसी स्थिति में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का यह कहना कोई मतलब नही रखता कि सभी रोहिन्ग्या आतंकी नही है। ममता जी भी यह बखूबी जानती है कि यह काम इतना आसान नही है कि आतंकियों को छॉट लिया जाये ? फिर भी रहम वरतने की सरकार से अपील कर रही हैं। ये पेंतरा निहायत वोट बैंक के लिये प्रतीत होता है, देश की सुरक्षा के लिये नही। पाकिस्तान के सबसे बड़े मददगार देश चीन के शिन्यियॉग प्रान्त में लगभग एक करोड़ उईगर मुसलमान निवास करते हैं जिन पर रोजे रखने, महिलाओं के बुरर्खे पहनने, खुलें में नवाज पढ़ने की इजाजत नही है। यहॉ तक कि रोज मेटल डिटेक्टर से जॉच–पड़ताल पुख्ता की जाती है। एक और आश्चर्यजनक पहलू यह है कि पाकिस्तान ने सीपी. ई. सी. के अंतगर्त अरब डॉलर के 19 सौदों पर हस्ताक्षर किये गये हैं। उसके बदले पाकिस्तान ने उस मुस्लिम बहुल शिन्जियान में मुस्लिम वागियों से लड़ने में चीन की मदद का संकल्प जताया हैं। ये तथ्य भारत के मुसलमानों को पता होना चाहिये कि इस्लामी दुनिया की असल हकीकत क्या है ? हिंसक वारताओं की असली वजह सन् 2012 में रोहिन्ग्या मुसलमानों और सुरक्षा कर्मियों के बीच झड़प हुयी तदुपरान्त हिंसा की वारदातें होने लगी। आरोप यह था कि म्यॉमार के रखाईन प्रान्त में रोहिन्ग्या मुसलमानों ने एक युवती (बौद्ध) से बलात्कार किया। जब बौद्धों ने इसका विरोध किया तब रोहिन्ग्या मुसलमानों ने उन पर हमला कर दिया। बौद्धों ने भी हमले का जबाब दिया। इसके बाद से झड़पों का सिलसिला प्रारंभ हो गया। जम्मू–कश्मीर में अवैध घुसपैठ करके आ गये रोहिन्ग्या मुसलमानों के पक्ष में अलगाव वादियों द्वारा किया जाने वाला विरोध प्रदर्शन परेशानी में डालने वाला कदम है। अलगाववादियों की एक बड़ी संख्या इस प्रदेश में मौजूद है जो पाकिस्तान से पैसा लेकर यहॉ के लोगो को उकसाने का काम करते है। ये अलगाववादी न तो भारत का कानून, न ही संविधान को मानना चाहते। ऐसी स्थिति में जनता और पुलिस के बीच टकराव भी हुये। रोहिन्ग्या मुसलमान ज्यादातर जम्मू और साम्बा जिले में रहते है। ऐसे प्रदर्शन और पथराव ने साबित कर दिया है कि इनकी सहानुभुति रोहिन्ग्या मूसलमानों के साथ तो हो सकती है लेकिन सन् 90 के दशक में बलात हॅकाल दिये गये विस्थापित कश्मीरियों के साथ विलकुल नही। ऐसे ही प्रदर्शन गत दिनों जयपुर और सहारनपुर सहित कई स्थानों पर हो चुके हैं। आखिर इस वर्ग को कश्मीरी पण्ड़ितों की पीड़ा क्यों नही दिखती ? पाकिस्तान में बैठा कुख्यात आतंकी सरगना अजहर मुसैद दुनिया के मुसलमानों से एक जुट हो जाने का आवाहन कर रहा है। क्या मुसलमानों को यह दिखलाई नही देता कि पाकिस्तान और बॉग्लादेश में रहने वाले हिन्दुओं पर हद दर्जे का अत्याचार हो रहा है। उनकी बहु–बेटियों के खुले आम बलात्कार दुराचार किया जा रहा हैं। सामूहिक ताकत का उपयोग कर धर्म परिवर्तन कराकर शादियॉ करायी जाती हैं हिन्दु मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। पाकिस्तान में रह रहे रोहिन्ग्या मुसलमानों को नागरिकता प्रदान करने से वह स्वयं कतरा रहा है ? विश्व भर में 56 मुस्लिम देश है। वे रोहिन्ग्या मुसलमानों को क्यों शरण नही देना चाहते ? म्यॉमार मे अभी 25 कब्रों का पता चला है। यहॉ की सेना का दावा है कि रोहिन्ग्या मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं की सामूहिक हत्या की गयी थी। मुस्लिम नृशंसता का यह कोई पहला उदाहरण नही है। बॉग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने पाकिस्तान पर आरोप लगाते हुये कहा है कि उसकी सेना द्वारा सन् 71 में जधन्य सैन्य अभियान चलाया गया था जिसमें 30 लाख निर्दोष मारे गये थे। वे संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित कर रही थी। म्यॉमार सरकार इन रोहिन्ग्याओं को वापिस लेने तैयार हा गयी है लेकिन कुछ लोग अपने राजनैतिक स्वार्थो के कारण उन्हे वापिस भेजे जाने पर इतराज जता रहे हैं। यह सोच समझ के बाहर है कि घुसपैठ कर अवैध तरीके से घुस आये रोहिन्ग्या मुसलमानों के लिये मुकदमा लड़ने, ऑसू बहाने, और छाती पीटकर रोने वालों ने कभी भी कश्मीर के उन हिन्दुओं के बारे मे कभी भी दया–सहानुभूति नही दिखाई जिन्हे अपने ही घर से भगाया गया था जो गत तीन दशकों से शरणार्थी जैसा नरकीय जीवन व्यतीत करने बाध्य है। इन हिन्दुओं के दुःदर्द की बात करने वालों को साम्प्रदायिक कहा जाता है।

बलूचों व सिंधियों ने किया प्रदर्शन

बलूच और सिंधी समुदाय के सदस्यों ने अशान्त बलूचिस्तान और सिंध प्रांत में पाकिस्तानी सुरक्षाबलों के अत्याचारों और मानवाधिकार के उल्लघन को लेकर पाकिस्तान के खिलाफ यहां संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय के बाहर संयुक्त प्रदर्शन किया। बलूच नेशनल मूवमेंट (बीएनएम) और जियै सिंध कौमी मूवमेंट (जेएसक्यूएम) के प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तानी सेना के बर्बर अभियानों, लोगों को लापता किये जाने, नागरिकों की हत्या और प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाई। बीएनएम– नॉर्थ अमेरिका के महासचिव नबी बख्श बलूच ने कहा कि बलूचिस्तान के कोलवाह इलाके में जारी पाकिस्तान सेना के अभियान से बड़े पैमाने पर जनहानि हुई है, बड़ी संख्या में लोगों को सैनिक अपने साथ ले गये। सैनिकों ने लोगों के घरों और संपत्तियों को भी जला दिया। जीयै सिंध कौमी मूवमेंट– नार्थ अमेरिका के सारंग अंसारी ने सिंध में राजनीतिक असंतोष की आवाज को दबाने की पाकिस्तान की राजकीय नीति की कड़ी आलोचना की। उन्होने कहा कि इसका नतीजा बड़ी संख्या में लोगों के लापता होने, लक्षित हत्याओं, हिन्दु लड़कियों का इस्लाम में जबरन धर्मांतरण और सूफी धर्मस्थलों व धार्मिक अल्पसंख्यकों की इबादतगाहों को जानबूझकर निशाना बनाने वाली बर्बर जातीय हिंसा के रूप में सामने आ रहा हैं। अंसारी ने संयुक्त राष्ट्र से मांग की कि पाकिस्तान को राष्ट्रवादी संगठनों के खिलाफ सिंध और बलूचिस्तान में आतंकी जेहादी संगठनों का इस्तेमाल करने से तत्काल रोका जाए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव को सौपे गए संयुक्त ज्ञापन में बीएनएम और जेएसक्यूएम ने विश्व निकाय से आग्रह किया कि वह बलूचिस्तान और सिंध में निर्दोष नागरिकों के खिलाफ किए जा रहे 'युद्ध अपराधों' के लिये पाकिस्तान के खिलाफ तत्काल कारवाई करे।

विश्व बैंक ने कहा,काफी तेज वृद्धि दर्ज कर रहा है भारत

विश्व बैंक के अध्यक्ष जिम यॉन्ग किम ने गुरूवार को कहा कि भारत काफी तेज वृद्धि दर्ज कर रहा है। उन्होने इस साल वैश्विक वृद्धि दर मजबूत रहने का भी अनुमान लगाया है। किम ने कल यहॉ ब्लूमवर्ग ग्लोबल बिजनेस फोरम की बैठक को संबोधित करते हुये बहुस्तरीय प्रणाली, निजि क्षेत्र और सरकारों के बीच सहयोग बढ़ाने की वकालत करते हुये कहा कि इससे वे मौजूदा स्थिति का लाभ उठा सकेंगे। उन्होनें कहा कि निष्क्रिय पूंजी अधिक ऊँचा रिर्टन देगी। वही विकासशील देशों को अपनी बुनियादी ढ़ाचा जरूरतों के लिये और अधिक पूंजी की जरूरत होगी। साथ ही उन्हे स्वास्थय शिक्षा और जलवायु परिवर्तन से बचाव के लिये अधिक निवेश की जरूरत होगी। उन्होने कहा कि जापान, यूरोप और अमेरिका के साथ भारत तेज वृद्धि दर्ज कर रहा है। किम ने कहा ''भारत तेज वृद्धि दर्ज कर रहा है। हमारा मानना है कि जापान भी तेजी से आंगे बढ़ रहा है। यूरोप भी तेजी से बढ़ रहा है।'' जून में विश्व बैंक के अध्यक्ष जिम यॉन्ग किम ने कहा कि जून में विश्व बैंक ने इस साल भारत की वृद्धि दर 7.2 फीसदी रहने का अनुमान लगाया था, जो 2016 में 6.8 प्रतिशत रही थी। विश्व बैंक के अधिकारियों ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से हैं।

जयपुर मे जिहादियों की करतूत

कट्टरवादी मुसलमानों ने पुलिस पर हमला बोला और अनेक स्थानों पर आगजनी की। राजस्थान के जयपुर शहर में जिस तरह से उन्मादी तत्वों ने उपद्रव मचाया, उससे एक बार फिर प्रशासन की ऑख खुली की खुली रह गयी। हालाकि मीडिया का एक तबका रोहिन्या मुसलमानों के मानवधिकारों की चित्ता में दुबला होता जा रहा है। गत आठ सितम्बर शुक्रवार दोपहर की नवाज के बाद जयपुर परकोटे की मस्जिदों से हजारों लोगों को हुजुम रोहिन्या मुसलमानों के पक्ष में सड़कों पर उतर आये। यह हुजुम प्रशासन की बिना अनुमति के नारेबाजी करता हुआ आगे बढ़ रहा था। भीड़ ने पुलिस थाने को घेरकर जलाने का प्रयास किया, विद्युत ट्रान्सफार्मर, एक एम्बुलेंस और अन्य 21 वाहनों को आग के हवाले कर दिया। पुलिस वाहनों को निशाना बनाया गया। उन पर हमलाकर पुलिसकर्मियों को गंभीर रूप से घायल कर दिया गया। क्या रोहिन्या मुसलमानों के नाम पर मुस्लिम युवाओं को आक्रोशित कर कोई बड़ा उपद्रव करने की साजिश रची जा रही है। क्या जनमानस में भय पैदा करके जान – बूझकर यह खेल खेला जा रहा है ? यह दृश्य चिन्ता पैदा करने वाला है। सहारनपुर में भी ऐसी वारदाताओं को जन्म दिया जा चुका है।

राष्ट्रधर्म (मासिक)

मूल्य : रू ५०

(नवम्बर 2017)

(कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाश्य)

सिंहावकलोकन विशेषांक

माननीय अटल जी के उत्तराधिकारी के रूप में जिन यशस्वी सम्पदाकों ने राष्ट्रधर्म' का दायित्व सम्भाला,उनमें श्री रामशंकर अग्निहोत्री, पद्मश्री पं. वचनेश त्रिपाटी और भानुप्रताप शुक्ल इत्यादि के नाम भी साहित्य और संस्कृति के पटल पर चिरजीवी हैं। प्रथम अंक से लेकर अद्यावधि राष्ट्रधर्म निरन्तर सामाजिक जागरण, राष्ट्र–जीवन की सुख–समृद्धि, राजनीतिक दिशा–दर्शन,चिरन्तर भारतीय संस्कृति की सुरक्षा तथा सर्वागीण समुन्नति के पथ–निर्देश के निमित्त निरन्तर सजग एवं सक्रिय रहा है। नवम्बर 2017 में राष्ट्रधर्म का संग्रहणीय सिंहावलोकन विशेषांक प्रकाशय है। इसमें राष्ट्रधर्म के प्रथम अंक से लेकर आगे के अंकों में संकलित महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक, प्रासंगिक, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं दुर्लभ तथा रोचक सामग्री की प्रस्तुति रहेगी, ताकि नये पाठकों को भी 'राष्ट्रधर्म' के ऐतिहासिक स्वरूप की जानकारी मिल सके। वे पुराने पाठक भी इससे लाभान्वित होंगे, जिनके संग्रह में राष्ट्रधर्म के पुराने अंक अब अवशिष्ट नहीं है। संक्षेप में यह विशेषांक प्रत्येक वर्ग के पाठकों के लिए संग्रहणीय होगा।

विशेष सम्पर्क

1.अभिकर्ता / पाठक–बन्धु अपनी सम्भावित बढ़ी हुई मॉग से 5 अक्टूबर,2017 तक कृपया अवश्य सूचित करने का कष्ट करें।

2. विज्ञापनदाता बन्धु–कृपया 5 अक्टूबर,2017 तक अपना विज्ञापन भेजकर हार्दिक सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

प्रबन्धक राष्ट्रधर्म मासिक, संस्कृत भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–226 004 दूरभाष (0522) 4041484,2681357 (व्यवस्था)

E-mail : mgr.rdm.1947@mail.com, editor_rdm_1947@rediffmail.com

सम्पादक के नाम पत्र

कांग्रेस के शासनकाल में घाटी के अलगाववादी भारत के साथ तोल–मोल की राजनीति करते थे और काग्रेस वोट की राजनीति के लिए उनकी हर जायज–नाजायज मांग मानती थी। उसका परिणाम यह होता था कि समूची घाटी में अलगाववाद और आतंक की लौ तेजी से धधकने लगती थी। यह सही है कि एक तरीके से देश के गददारों को कांग्रेस दशकों से पालती चली आ रही थी। लेकिन भाजपा सरकार आने के बाद उनको करारा जवाब दिया गया है। घाटी में बैठकर वे देश के खिलाफ जितने भी षड्यंत्र रचते थे, उसकी पोल खोलने का काम एजेसियां करने लगी हैं। सैनिक चाहे घाटी में तैनात हों या फिर सीमा पर, आज उनका हौसला बेहद बढ़ा हुआ है। इसके पीछे की कहानी भी किसी से छिपी नहीं है। कांग्रेस सरकार ने सेना के हाथ बांध रखे थे। गोली खाते हो, फिर भी जवाब मत दो। लेकिन अब ऐसा नही है वर्तमान केन्द्र सरकार ने दुश्मनों से लड़ने के लिए भारतीय सैनिकों को पूरी छूट दे रखी है। घाटी में आये दिन मारे जाते आतंकी इसका सबूत हैं।

— निकुंज वर्मा

ये सच्चाई है

१३७८ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना - **नाम है ईरान**

१७६१ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना - **नाम है अफगानिस्तान**

१९४७ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना - **नाम है पाकिस्तान**

१९७१ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना - **नाम है बांग्लादेश**

१९५२ से १९९० के बीच भारत का एक राज्य इस्लामिक हो गया - **नाम है कश्मीर**

और अब उत्तरप्रदेश, असम और केरल इस्लामिक राज्य बनने की कगार पर है। हम जब भी

हिन्दुओं को जमाने की बात करते है, सच्चाई बताते हैं तो कुछ लोग हमें आरएसएस, विश्व

हिन्दू परिषद, शिव सेना और बीजेपी वाला कहकर पल्ला झाड़ लेते है ।

इसे भी जाने

भारत में ३ लाख मस्जिदें है, जो अन्य किसी भी देश में नही है। वाशिंगटन में २४ चर्च हैं, लन्दन में ७१ और इटली के मिलान शहर में ६८ चर्च हैं। **फिर भी हिन्दू सांप्रदायिक है ? किसी सेकुलर के पास इसका जवाब नहीं है ?**

मैन आईएसआईएस का विरोध करते किसी मुस्लिम को नहीं देखा पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का विरोध करते हुए लाखों हिन्दू देखे हैं

मैने किसी मुस्लिम को होली, दिवाली की पार्टी देते नहीं देखा पर हिन्दुओं को इफ्तार पार्टी देते देखा है।

मैने कश्मीर में भारत के झंडे जलते देखे हैं पर कभी पाकिस्तान का झंडा जलाते हुए किसी मुसलमानों को नही देखा है।

मैने हिन्दुओं को टोपी पहने मजारों पर जाते देखा है पर किसी मुस्लिम को टीका गाये या मंदिर जाते नही देखा है।

मैने मीडिया को विदेशों के गुण गाते देखा है पर भारतीय संस्कारों का प्रचार करते कभी नहीं देखा है।

शिक्षा में सुधार बेहद आवश्यक है

कोई भी ग्रन्थ अंतिम शब्द नही होता। ग्रन्थ पोथी बद्धता को बढ़ाने वाले नही होने चाहिये, जबकि हम सभी पोथीबद्ध हो जाते है। औपनिवेशिक काल में स्वामी विवेकानंद, रविन्द्र नाथ ठाकुर, महात्मा गॉधी जैसे महापुरूषों ने हालाकि मैकाले शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त की, लेकिन वे इससे अप्रभावित रहे और भारतीय शिक्षा पद्धति पर ही ध्यानाकर्षित किया।'' उक्त उद्बोधन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने दिया। वे गत दिनों नई दिल्ली में भारतीय पुनरूत्थान विद्यापीठ के द्वारा आयोजित भारतीय शिक्षा ग्रन्थमाला के लोकार्पण समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि भारतीय शिक्षा को पुनर्जीवित करने के लिये हमारे यहां प्रयास किये जा रहा है। विश्व में बहुत सी अपनाने योग्य बाते है, लेकिन उन्हे हम किस रूप में लेते हैं, वह हमारे ऊपर है। हमारे महापुरूषों ने क्या कहा, कहां कहा, इन सबको समझने के लिये महापुरूषों के बारे में अध्यन करना पड़ता है। घर में भी, विद्यालय में भी, समाज में भी एक जैसी शिक्षा जब तक नही मिलेगी, तब–तक अच्छी शिक्षा संभव नही है। उन्होने आगे कहा कि प्रायः विकास के लिये सन्दर्भ के लिये अमेरिका और इंग्लैण्ड की ओर देखा जाता है, जबकि शिक्षा के क्षेत्र में फिनलैण्ड की शिक्षा पद्धति इस समय सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। वहां की शिक्षा पद्धति भारत की गुरूकुल परंपरा से मिलती –जुलती है। वहां शिक्षक विद्यार्थियों को अधिक अंक लाने के बजाय, अच्छा नागरिक बनाने के लिये प्रेरित करते हैं कार्यक्रम में उपस्थित राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व संचालिका प्रमिला ताई ने कहा कि अच्छी बात है कि हम शिक्षा की मजबूती के बारे में सोचते है। शिक्षा का सुधार केवल शासन से नही हो सकता। मां की भूमिका में आकर शिक्षा देने वाले की की शिक्षा उत्तम होती है, इसलिये हम मां सरस्वती कहते हैं। उन्होने कहा कि शिक्षा हमारे देश में मानव बनाने की प्रक्रिया है। इसलिये मानव बनाने वाली ही शिक्षा होनी चाहिये। भारत देश में शिक्षा न सिर्फ पुस्तकीय ज्ञानभर है, बल्कि व्यावहारिक स्तर भी दिशासूचक का काम करती हैं।

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने - बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com